Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

दशरथ जातक एवं वाल्मीकि रामायण
(एक तुलनात्मक अध्ययन)

डॉ0 (श्रीमती) दीप्ति विष्णु
संस्कृत विभाग,
सी0एम0पी0 डिग्री कालेज,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

शोध आलेख सार - वाल्मीकि द्वारा रामायण की सृष्टि भारतीय ललित साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। जो भारतीय संस्कृति के आदर्शवाद का उज्ज्वल प्रतीक बन गई है।

वाल्मीकि गिरिसंभूता राम–सागरगामिनी।
पुनाति भुवनं पुण्या रामायण पयस्विनी।।

मुख्य शब्द – दशरथ, जातक, वाल्मीकि, रामायण, राम, साहित्य, बौद्ध।

"राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाये सहज सम्भाव्य है"

(मैथिलीशरण गुप्त)

की सार्थकता को सिद्ध करने वाले दो महाकाव्यों में एक के प्रणेता हैं आदिकवि वाल्मीकि व दूसरे के तुलसीदास। वैदिक युग से आधुनिक युग तक मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र के शील, शक्ति व सौन्दर्य के विविध रूपों ने जन–सम्प्रदाय को अपनी ओर आकृष्ट किया है। वेदों में राम शब्द का प्रयोग अनेक बार हुआ है किन्तु वे दशरथ नन्दन राम से भिन्न प्रतीत होते हैं।

उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर वाल्मीकि रामायण को रामकथा का मूलस्त्रोत स्वीकार किया जाता है। साथ ही यह महाभारत के चार स्थलों–रामोपाख्यान, आरण्यकपर्व, द्रोण व शान्तिपर्व पर वर्णित है। बौद्ध परम्परा में श्रीराम सम्बन्धित दशरथ जातक, अनामक जातक व दशरथ कथानम् नामक तीन जातक उपलब्ध हैं। रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी वे इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। जैन साहित्य में राम–कथा सम्बन्धी अत्यन्त विस्तृत साहित्य प्राप्त होता है। जिसमें प्रमुख ग्रन्थ हैं – विमलसूरिकृत पउमचरियम् (प्राकृत), रविषेणाचार्य – पद्मपुराण (संस्कृत),

हेमचन्द्राचार्य – त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित (संस्कृत), स्वयम्भू – पद्मचरित्र (अपभ्रंश), गुणभद्र – उत्तरपुराण (संस्कृत) आदि।

इस संदर्भ में कामिल बुल्के का कथन है–'जिस दिन वाल्मीकि ने इस कथा को आदि रामायण ''काव्य'' के रूप में ग्रंथित किया, उसी दिन से रामकथा की दिग्विजय प्रारम्भ हुई। जब राम कथा की लोकप्रियता बढ़ने लगी तो बौद्ध, जैनियों ने भी इसे अपनाना प्रारंभ किया।' लेकिन इनमें राम – कथा का उद्देश्य पुरुषोत्तम राम के शक्ति, शीलादि चरित्र को अभिव्यक्त करने की अपेक्षा अपने – अपने धर्मों के अनुकूल रामकथा को नयी भाव–भूमि प्रदान करना रहा है जो पूर्वाग्रह से प्रेरित है। ईसा की कई शताब्दी पूर्व बौद्धों ने राम को बोधिसत्व का अवतार मानकर अपने साहित्य में स्थान दिया तो जैनियों ने राम को केवल जैन धर्मावलंबी ही न मानकर उन्हें त्रिषष्टिमहापुरुषों (24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 वासुदेव, 9 प्रतिवासुदेव, 9 बलदेव) में भी रखा। वैष्णवों में विष्णु, बौद्धों में बुद्ध, जैनियों में आठवें बलदेव ''राम'' माने जाते हैं।

यहाँ हम बौद्ध **दशरथ जातक** का रामायण की कथा से साम्य एवं वैषम्य पर विचार करेंगे। दशरथ जातक ''पालि जातकट्ठवण्णना'' में सुरक्षित है, जो पांचवी शता0 ई0 की एक सिंहली पुस्तक का पालि अनुवाद है। इस सिंहली पुस्तक में जो कथाएं पाई जाती हैं, वे प्राचीन पाली गाथाओं के आधार पर लिखी गई हैं। मूल पुस्तक आजकल अप्राप्य है। अज्ञात लेखक का कथन है कि मैंने अनुराधपुर की परम्परा के आधार पर अपनी पुस्तक की रचना की है। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि जातकों का गद्य अंश प्रामाणिक नहीं है। क्योंकि वह गाथाओं के आठ शताब्दियों बाद, मौखिक परम्परा के आधार पर लिपिबद्ध किया गया है। ज्ञात है कि ईसा के लगभग 400 वर्ष पूर्व बौद्ध परंपरा में 'जातक' नाम से पालि भाषा में 547 कथाएँ लिखी गई थीं। जातक ऐसी कथा है जिसमें महात्मा बुद्ध असंख्य पूर्व जन्मों में मनुष्य अथवा पशु के रूप में जन्म लेते हैं व सभी को कर्तव्य–अकर्तव्य का उपदेश देते हैं।

पच्चुपन्नवत्थु (वर्तमान कथा)–एक बार महात्मा बुद्ध श्रावस्ती के जेतवन में विहार कर रहे थे। वहीं पर एक गृहस्थ के पिता की मृत्यु हो गई और उसने शोक के वशीभूत होकर अपना सारा कर्त्तव्य छोड़ दिया। यह जान कर बुद्ध ने उससे कहा–'कि प्राचीन काल के पण्डित लोग (पोराणक पंडिता) अपने पिता के मरण पर किंचित भी शोक नहीं करते थे, तुम भी मत करो।' इसके अनन्तर दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण देने के लिए बुद्ध ने दशरथ जातक सुनाया।

अतीतवत्थु (अतीत कथा) – वाराणसी के राजा दशरथ की सोलह हजार रानियों में ज्येष्ठा महिषी की तीन सन्तानें थीं–दो पुत्र (राम पंडित और लक्खण) और एक पुत्री सीता देवी। इस महिषी के मरने के पश्चात् राजा ने एक दूसरी को ज्येष्ठा महिषी के पद पर नियुक्त किया। उसके भी भरत कुमार नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। राजा ने उस अवसर पर उसे एक वर दिया और इसके बल पर रानी ने अपने पुत्र के लिए राज्य माँगा। राजा ने उसके षड्यन्त्रों के भय से राम को अन्यत्र चले जाने और अपने मरने के अर्थात् बारह वर्ष बाद लौटकर राज्य पर अधिकार करने का आदेश दिया। इस पर राम पंडित हिमालय की ओर प्रस्थान करते हैं और उनके भाई लक्खण

और उनकी बहन सीता उनके साथ जाते हैं। नौ वर्ष के बाद दशरथ की मृत्यु होती है। किन्तु भरत राजा नहीं बनना चाहते और चतुरंगिणी सेना लेकर राम को वापस ले आने के उद्देश्य से हिमालय जाते हैं। उस समय राम अकेले ही हैं। वे अपने पिता के देहान्त का समाचार सुनकर न तो शोक करते हैं और न रोते हैं –"रामपंडितो नेव सोचि न रोदि"। वह लक्खण और सीता देवी को सान्त्वना देने के लिए अनित्यता और शोक की व्यर्थता का उपदेश देते हैं।[1] भरत ने उनके शोकरहित होने का कारण पूछा –

केन रामप्यभावेन, सोचितब्बं न सोचसि।
पितरं कालकतं सुत्वा, न तं पसहते दुखं।।

राम पंडित ने अपने शोकरहित रहने के कारण बताते हुए दस गाथाएं कहीं, जो संसार की अनित्यता पर प्रकाश डालती हैं–'जिसे आदमी बहुत विलाप करके भी जीवित नहीं रख सकता, उसके लिए कोई बुद्धिमान मेधावी अपने आप आप को क्यों कष्ट दे? तरूण, वृद्ध, मूर्ख, पंडित, धनी तथा दरिद्र सभी मरणशील हैं। पके फलों को नित्य गिर पड़ने का भय रहता है और जिसने भी जन्म ग्रहण किया है उसे नित्य मृत्यु का भय रहता है' इत्यादि।

फलानं इव पक्कानं निच्चं पपतना भयं।
एवं जातानं मच्चानं निच्चं मरणतो भयं।।[2]

वाल्मीकि रामायण में भी यही पद्य प्राप्त होता है–

यथा फलानां पक्वानां नान्यत्र पतनाद् भयम्।
एवं नरस्य जातस्य नान्यत्र मरणाद् भयम्।।[3]

उनके उपदेश को सुनकर सब मोह से रहित हो गए। बाद में राम पंडित यह कहते हुए भरत का प्रस्ताव अस्वीकार करते हैं, "मेरे पिता ने मुझे बारह वर्ष की अवधि के अन्त में राज्य करने का आदेश दिया। अब लौटकर मैं उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर सकूँगा। मैं तीन वर्ष बाद लौटूँगा।" राम उन्हें अपनी तृण–पादुकाएँ देते हुए कहते हैं–'मेरे आने तक ये शासन करेंगी।' तीन वर्ष बीत जाने पर राम लौटते हैं और अपनी बहन सीता से विवाह करते हैं। सोलह सहस्त्र वर्ष तक धर्मपूर्वक राज्य करने के बाद वे स्वर्ग चले जाते हैं। **समोधान** में बुद्ध कहते हैं कि–उस समय दशरथ महाराज शुद्धोधन थे, माता महामाया, सीता राहुल की माता (यशोधरा), भरत आनन्द, लक्खन सारिपुत्त और रामपण्डित तो मैं ही था।[4]

अन्तर–दशरथ जातक की अन्तरंग परीक्षा से सिद्ध होता है कि उसका कथानक मौलिक नहीं है। **(1)** रामायण में कैकेयी ने वर के बल पर राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँग लिया था, अतः दशरथ की मृत्यु के बाद राम का वन में रहना आवश्यक था, लेकिन दशरथ जातक में इसके लिए कोई समीचीन कारण नहीं है। दशरथ ने कहा था कि 'मेरी मृत्यु के पश्चात् लौटो' तब ज्योतिषियों से यह समझकर कि मैं और बारह वर्ष जीता रहूँगा, उन्होंने इस अवधि के अन्त में आने को कहा। **(2)** रामायणीय कथा में सीता का अपने पति के साथ चला जाना स्वाभाविक है। दशरथ जातक में इसके लिए कोई ऐसा कारण नहीं है। सीता को विमाता के षड्यंत्रों से कोई आशंका नहीं थी। इन असंगतियों के कारण स्पष्ट होता है कि यह जातक रामायणीय कथा का विकृत रूप है। दोनों

कथाओं में जो शेष अन्तर पाए जाते हैं, वे स्वाभाविक ही हैं। (3) जातक के प्रारम्भ में यह कहा गया है कि बुद्ध ने पिता के मरण से शोकाकुल पुत्र को धैर्य देने के लिए दशरथ के मरने पर राम के धैर्य का उदाहरण दिया था। इस उद्देश्य के लिए सीताहरण का उल्लेख अनावश्यक था। (4) इसके अतिरिक्त जातक के अनुसार बुद्ध अपने किसी पूर्व जन्म में राम पंडित थे, अतः बौद्ध आदर्श की रक्षा के लिए रावण–वध का अभाव स्वाभाविक है। यह रामायण से जातक में एक महान अंतर है। (5) राम और सीता, भाई–बहन का विवाह एक मौलिक अन्तर है, किन्तु इसके लिए भी बौद्ध ग्रन्थों में कई उदाहरण प्रस्तुत हैं (यथा कुणाल जातक)। (6) साथ ही दशरथ के सोलह हजार रानियों का होना, खड़ाऊँ का अन्याय देखकर लड़ जाना आदि कुछ अतिशयोक्तियाँ हैं।

इसके अतिरिक्त दशरथ जातक के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उस जातक का मुख्यांश गद्य में है और अपेक्षाकृत अर्वाचीन भी। पद्य का अंश बौद्ध त्रिपिटक की पालि में निबद्ध गाथाएं हैं। 3 मुख्य गाथाएं ही प्राप्त होती है। पहली गाथा का विषय है–वनवासी राम के पास भरत के आगमन के बाद दशरथ की जलक्रिया। वहाँ जब भरत राम को दशरथ की मृत्यु के बारे में बताते हैं तब राम अकेले ही होते हैं। बाद में लक्ष्मण एवं सीता के आने पर राम उन्हें जलाशय में खड़ा करके इस घटना की सूचना देते हैं।[5] ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक रामायण की 'जलक्रिया' से अपरिचित था, अतः उसने यह कल्पना की होगी। रामायण में यह वृत्तान्त (जलांजलि, पिण्डदान) अयोध्याकाण्ड एक सौ तीन वें सर्ग के श्लोक संख्या 20–30 में प्राप्त होता है, जहां राम कहते हैं–भाई!तुम इंगुदी का पिसा हुआ फल, चीर व उत्तरीय ले आओ। मैं महात्मा पिता को जलदान दूंगा।[6]

रामायण में राम पिता के देहान्त का समाचार सुनकर अत्यन्त शोक प्रकट करते हैं।[7] और केवल बाद में भरत को सान्त्वना देते हैं।[8] दूसरी गाथा में अनित्यता का उपदेश है। जातक में राम किंचित भी शोक नहीं करते। अन्तिम 13वीं गाथा[9] में कहा गया है कि कम्बुग्रीव महाबाहु राम ने सोलह सहस्र वर्ष तक राज्य किया। इस गाथा का संस्कृत रूप रामायण, महाभारत व हरिवंश में पाया जाता है।[10]

कितने विदेशी तथा कितने स्वदेशी रामकथा–विशेषज्ञ जैसे डॉ0 वेबर, श्री दिनेशचन्द्र सेन आदि यही मानते हैं कि रामायण की रामकथा बौद्ध साहित्य से ही आयी है। इस जातक में युद्ध का कोई उल्लेख नहीं है, अतः डॉ0 बेवर का अनुमान है कि सीताहरण का मूल स्त्रोत होमर काव्य में वर्णित पैरिस द्वारा हेलेन का अपहरण है। डॉ0 सुनीति कुमार चटर्जी भी इसका समर्थन करते हैं। किन्तु कामिल बुल्के इससे असहमत होते हुए कहते हैं कि रामायण के पहले बौद्ध साहित्य में रामकथा आयी अवश्य, किन्तु वह पहले से आख्यान–काव्य के रूप में उत्तर भारत में प्रचलित हो चुकी थी।[11] महात्मा बुद्ध के मूलवचन 'त्रिपिटक' में राम से बुद्ध का संबंध आदरपूर्वक जोड़ा गया है। बुद्ध के मुख से कहलवाया गया है कि मैं ही राम था। इस प्रकार मूल बौद्ध ग्रन्थ में राम का आदर है। वाल्मीकीय रामायण के मूल पाठ में बुद्ध के लिए कुछ नहीं कहा गया है। परन्तु परवर्ती वाल्मीकीय रामायण में राम के मुख से महात्मा बुद्ध को अपशब्द कहलवाया है–''जैसे चोर दण्डनीय है, वैसे नास्तिक (चार्वाक) बुद्ध, तथागत दण्डनीय है, ऐसा यहाँ समझो।''[12]

उपर्युक्त श्लोक दक्षिणात्य पाठ में है, गौड़ीय तथा पश्चिमोत्तरीय में नहीं है। विद्वानों ने रामायण पर बौद्धों का प्रभाव भी माना है। फा0का0 बुल्के भी कहते हैं–''राम का अत्यन्त शान्त और कोमल स्वभाव उनकी सौम्यता आदि ध्यान में रखकर स्वीकार करना पड़ता है कि वे मुनि पहले हैं, क्षत्रिय बाद में। अतः इनके चरित्र चित्रण में किंचित परोक्ष बौद्ध प्रभाव देखना निर्मूल कल्पना नहीं प्रतीत होती।[13]

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर हम यह कह सकते है कि बौद्ध दशरथ जातक वाल्मीकीय रामायण का विकृत रुप है, जिसे रामकथा की लोकप्रियता के आधार पर बौद्धों ने भी इसे अपनाया किन्तु अपने धर्मानुकूल उसे नई भावभूमि प्रदान की जो पूर्वाग्रह से प्रेरित थी। ऐसी सम्भावना प्रतीत होती है कि भाई–बहन के विवाह की यह प्रथा मिस्त्र में कहीं प्रचलित थी[14] वहीं से यह कथा आई होगी। यूनानी इतिहासकार डिओडोरस के अनुसार मिस्त्र समाज में सम्पत्ति संबंधी विशेषाधिकार स्त्रियों को ही प्राप्त था। पत्नी की मृत्यु के बाद शासक को उत्तराधिकारी बने रहने के लिए अपनी पुत्री अथवा बहन से विवाह करना पड़ता था।[15]

रामकथा की दिग्विजय के इस सिंहावलोकन से स्पष्ट है कि वाल्मीकि द्वारा रामायण की सृष्टि भारतीय ललित साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। जो भारतीय संस्कृति के आदर्शवाद का उज्ज्वल प्रतीक बन गई है।

वाल्मीकि गिरिसंभूता राम–सागरगामिनी।
पुनाति भुवनं पुण्या रामायण पयस्विनी।।

सन्दर्भ

1. रामपंडित का सारा उपदेश गाथाओं में है (3–12)।
2. दशरथ जातक, 5वाँ पद्य
3. रामायण– 2/105/17
4. जातक कथा, भाग चार, दशरथ जातक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
5. एथ लक्खन सीता च उभो ओतरथोदकं।
   एवायं भरतो आह राजा दसरथो मतो।।
6. आनयेऽगुदिपिण्याकं चीरमाहर चोत्तरम्।
   जलक्रियार्थं तातस्य गमिष्यामि महात्मनः।। (रामायण 2/103/20)
7. तां श्रुत्वा करुणां वाचं पितुर्मरणसंहिताम्।
   राघवो भरतेनोक्तां बभूव गतचेतनः।। रामायण–2/103/1
8. नात्मनः कामकारो हि पुरुषोऽयमनीश्वरः।
   इतश्चेतरतश्चैनं कृतान्तः परिकर्षति।। रामायण–2/105/15–42
9. दस वस्ससहस्सानि सट्ठि वस्स सतानि च।
   कंबुगीव माहावाहु रामो रज्जमकारयि।।

10. दश वर्षसहस्त्राणि दशवर्षशतानि च।
भ्रातृभिः सहतिः श्रीमान् रामो राज्यमकारयत्।। रामायण–6/128/106, महाभारत–3/148/38, हरिवंश–41/151
11. रामकथा पृ0 99
12. यथा हि चोरः स तथा हि बुद्धस्तथागतं नास्तिकमत्र विद्धि।
13. रामकथा पृष्ठ 101
14. Walter Scheidel की पुस्तक Ancient Egyptians Sivling Marriage के आधार पर।
15. प्राचीन विश्व की सभ्यताएं–डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 205.
16. जातक–चतुर्थ खण्ड, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, जातक संख्या 461, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
17. रामकथा और तुलसीदास–फादर डॉ0 कामिल बुल्के, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद।
18. रामकथा (उत्पत्ति और विकास)–फादर डॉ0 कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय
19. वाल्मीकीय रामायण (प्रथम खण्ड)–गीता प्रेस, गोरखपुर।
20. वाल्मीकीय रामायण (द्वितीय खण्ड)–गीता प्रेस, गोरखपुर।
21. महाभारत–गीता प्रेस, गोरखपुर।
22. रामायण रहस्य–अभिलाष दास, कबीर पारख संस्थान, इलाहाबाद।